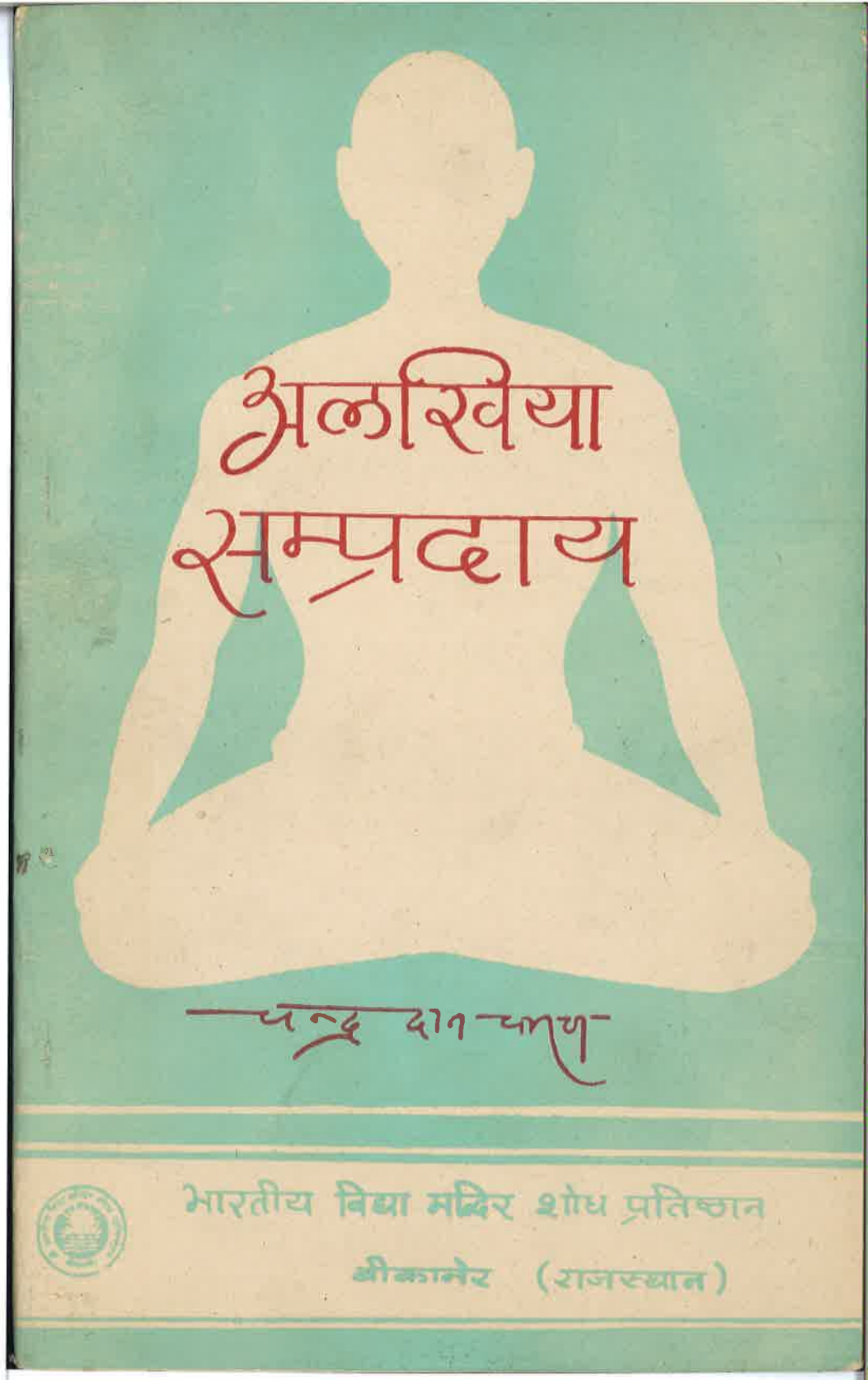

अलखिया सम्प्रदाय

चन्द्र दान चारण

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राजस्थान)

आमुख

श्री लालगिरिजी उन्नीसवीं शताब्दी की निर्गुण काव्यधारा के अन्तिम संत-कवि थे। अब तक साहित्य-जगत में संत तुलसी साहब इस शताब्दी के अन्तिम निर्गुण कवि माने जाते रहे हैं। पर, 'अलखिया सम्प्रदाय' के प्रवर्तक लालगिरिजी के जीवन और वाणी पर 'प्रतिष्ठान' द्वारा जो यह तात्त्विक शोध अध्ययन संत साहित्य के विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है, उससे तुलसी साहब से भी आगे निर्गुण काव्य-धारा के प्रवाहित रहने का पुष्ट प्रमाण मिलता है।

तात्त्विक शोध की वर्तमान समस्या जो एक चुनौती के रूप में अध्येताओं के समक्ष उपस्थित है, उस के समाधान की दिशा में भी यह अध्ययन बड़ा उपादेय सिद्ध होगा। सन् २९ में संत-आचार्य श्री क्षितिमोहन सेन ने अपने ग्रन्थ "मैडीवल मिस्टिसिज्म ऑफ इन्डिया" में 'लालबेग' अथवा 'अलखगिर' संत परम्परा का उल्लेख किया था। बाद में श्री परशुराम चतुर्वेदी भी अपने ग्रंथ "उत्तरी भारत की संत परम्परा" में आचार्यजी द्वारा दी गई जानकारी से आगे, इस सम्बन्ध में कोई विशेष जानकारी नहीं दे पाए हैं। इस तरह एक अल्पज्ञात प्रमुख संत के सम्बन्ध में पहली बार शोधपरक सामग्री— जीवन और कृतित्व के सर्वांगीण अध्ययन के रूप में प्रकाशित कर 'प्रतिष्ठान' ने एक लम्बे अभाव की पूर्ति की है। तात्त्विक शोध अध्ययन की दृष्टि से इस प्रकार के अध्ययन अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इससे एक बात और भी पुष्ट होती है कि अभी हिन्दी साहित्य में, और विशेषकर संत साहित्य के क्षेत्र में तात्त्विक शोध अध्ययन की दृष्टि से काफी सामग्री और गुंजाइश है।

श्री लालगिरि एक क्रान्तदर्शी सन्त थे। समाज में व्याप्त कुरीतियों, वाह्याडम्बरों और भैरू-भोपा, बायाँ-मायाँ के अन्धविश्वासों के प्रति उन्होंने करारी चोट की है। उनकी वाणी में कबीर का रहस्य, गोरख का योग, रामानन्द की भक्ति और सूफीमत की प्रेममयी मस्ती है। संत गा उठता है:—

'हुए मतवाले पीकर प्याले, अरस परस कर जानी।'

'भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान' संत साहित्य और लोक साहित्य के क्षेत्र में बिखरी पड़ी रत्न-मणियों को एकत्रित कर विद्वानों तथा अपने शोध सहायकों द्वारा शोधपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करने की दिशा में शुरू से ही जागरूक रहा है। इसी दृष्टि से "भारतीय विद्या मंदिर ग्रन्थमाला" के अन्तर्गत चार ग्रन्थ-पुष्प साहित्य जगत के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किये जा चुके हैं। आशा है, विद्वद्जन इस कृति का भी पहले की तरह ही पूर्ण समादर करेंगे।

प्रथम

सत्यनारायण पारीक
अध्यक्ष

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

प्रकाशित ग्रन्थ

- गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा
  श्री चन्द्रदान चारण एम.ए., साहित्यरत्न
- रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो
  श्री नरोत्तमदास स्वामी एम. ए.
- अमिय हलाहल मद भरे
  श्री श्रीगोपाल गोस्वामी
- प्राचीन काव्यों की रूप परम्परा
  श्री अगरचन्द नाहटा
- अलखिया सम्प्रदाय
  श्री चन्द्रदान चारण एम. ए., साहित्यरत्न

आगामी प्रकाशन

- जांभाजी री बाणी
  श्री सूर्यशंकर पारीक
- नागदमण
  श्री मूलचन्द 'प्राणेश' साहित्यरत्न
- संत परिचयी
  श्री श्रीगोपाल गोस्वामी
- प्राचीन ऐतिहासिक वातां—भाग १
  श्री नरोत्तमदास स्वामी एम. ए.
- श्री करनी चरित्र
  श्री चन्द्रदान चारण एम. ए., साहित्यरत्न
- रणमल्ल छन्द
  श्री मूलचन्द 'प्राणेश' साहित्यरत्न
- राजस्थानी बातां
  श्री नरोत्तमदास स्वामी एम. ए.

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राजस्थान)